तुम कब जाओगे, अतिथि
शरद जोशी

लेखक परिचय शरद जोशी इनका जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई 1930 को हुआ इनका बचपन कई शहरों में बीता कुछ समय तक यह सरकारी नौकरी में भी रहे फिर उन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया उन्होंने व्यंग्य लिखना इन्होंने व्यंग कॉलम के अतिरिक्त हास्य व्यंग पूर्ण धारावाहिकों की पटकथा और संवाद भी लिखे हैं 1991 इनका देहांत हो गया

लेखक के घर एक अतिथि 4 दिनों से रह रहा है ।जिसे देखकर वे कहते हैं कि अतिथि तुम्हें देखते ही मेरा बटुवा कांप गया था। फिर भी हमने भरसक मुस्कान के साथ तुम्हारा स्वागत किया था। रात के भोजन को मध्यमवर्गीय डिनर जैसा भारी–भरकम बना दिया गया था ।सोचा था कि तुम सुबह चले जाओ पर ऐसा नहीं हुआ। तुम यहां आराम से सिगरेट के छल्ले उड़ा रहे हो उधर मैं तुम्हारे सामने कैलेंडर की तारीखें बदल–बदल कर तुम्हें जाने का संकेत दे रहा था। तीसरे दिन तुमने कपड़े धुलवाने की फरमाइश की कपड़े धुल कर आ गए लेकिन तुम नहीं गए। पत्नी ने सुना तो वह भी आंखें तरेरने लगी ।चौथे दिन कपड़े धुल कर आ गए फिर भी तुम डटे रहे बातचीत के सभी विषय समाप्त हो गए। दोनों अपने–अपने में मग्न होकर पढ़ रहे हैं।

सौहार्द समाप्त हो चला है, भावनाएं बदल चुकी है, सत्कार की उष्मा समाप्त हो चुकी है ।अब भोजन में खिचड़ी बनने लगी है। घर को स्वीट होम कहा गया है पर तुम्हारे होने से घर का स्वीटनेट खत्म हो गयी है। अब तुम चले जाओ वरना मुझे गेट आउट कहना पड़ेगा ।यदि तुम अपने आप कल सुबह चले ना गए तो मेरी सहनशीलता जवाब दे जाएगी ।माना तुम देवता हो किंतु मैं भी आदमी हूं मनुष्य और आदमी देवता ज्यादा देर तक साथ नहीं रह सकते इसलिए अपना देवत्व सुरक्षित रखना चाहते हो तो अपने आप गीता हो जाओ तुम कब जाओगे अतिथि।

ATITHI
Tum kab Jaoge?